

दिव्य दर्शनीय स्वरूप कैसे बनें...

स्व प्राप्त सम्पन्न स्वरूप व इच्छा मात्रम अविद्या... ये दो स्वरूप इमर्ज करें



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

पहला पुरुषार्थ देखा श्रृंगारी हुई मूर्त रहे, दूसरा पुरुषार्थ देखा कि अपने अव्यक्त स्वरूप को इमर्ज करना है, ज्यादा से ज्यादा उसको इमर्ज करते जाना है, और तीसरा बीज रूप या अशरीरीपन के अभ्यास द्वारा उस बीज स्वरूप में आकर हरेक पते को सकाश देते जाना है।

चौथा पुरुषार्थ, जो बाबा कई बार कहते हैं कि बच्चे आपको भक्तों की पुकार नहीं सुनाई देती है? कितना पुकार रहे हैं कि हमारी भावनाओं

इच्छा है। तो बाबा कहते कि उनकी भावनाओं को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमारा पुरुषार्थ ये होना चाहिए कि हम प्राप्ति स्वरूप, सम्पन्न स्थिति में स्थित हो जायें। क्योंकि जब मैं प्राप्ति स्वरूप होंगी तभी तो किसी को प्राप्त करा सकूंगी। अगर मैं ही अप्राप्त अपने आपको महसूस करती हूँ तो मैं अनेकों को प्राप्ति कैसे करा सकती हूँ! तो पहले तो अपने स्वरूप को प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप में स्थित करें। दूसरा जो भक्तों की इच्छा है, उन

को पूरा करो, हमारी इच्छाओं को पूरा करो, हमें ये प्राप्ति का अनुभव कराओ। तीन रूप से पुकारते हैं। एक तो इच्छापूर्ति के लिए, दूसरा कोई न कोई प्राप्ति का अनुभव करना चाहते हैं, तीसरा, उनको दर्शन की इच्छा है। तो बाबा कहते कि उनकी भावनाओं को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमारा पुरुषार्थ ये होना चाहिए कि हम प्राप्ति स्वरूप, सम्पन्न स्थिति में स्थित हो जायें। क्योंकि जब मैं प्राप्ति स्वरूप होंगी तभी तो किसी को प्राप्त करा सकूंगी। अगर मैं ही अप्राप्त अपने आपको महसूस करती हूँ तो मैं अनेकों को प्राप्ति कैसे करा सकती हूँ! तो पहले तो अपने स्वरूप को प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप में स्थित करें। दूसरा जो भक्तों की इच्छा है, उन

सुनाई देनी भावनाओं को के लिए ये दो होने चाहिए।

चाहिए। उनकी पूर्ण करने पुरुषार्थ विशेष

बाबा कहते कि उनकी भावनाओं को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमारा पुरुषार्थ ये होना चाहिए कि हम प्राप्ति स्वरूप, सम्पन्न स्थिति में स्थित हो जायें। क्योंकि जब मैं प्राप्ति स्वरूप होंगी तभी तो किसी को प्राप्त करा सकूंगी।

पाँचवा पुरुषार्थ, बाबा हमेशा हम बच्चों को कहते हैं कि जैसे विष्णु के जो चारों हाथों में चार अलंकार दिखाये तो बच्चे दिव्य दर्शनीयमूर्त बनने के लिए आपने चारों अलंकार धारण कर लिए हैं? क्योंकि ये अलंकार देवताओं के तो हैं नहीं। ये अलंकार किसके हैं? हम बच्चों के हैं। तो बाबा कई बार

मुर्ली में कहते हैं कि एक अलंकार पकड़ने जाते हैं तो दूसरा छूट जाता है, दूसरा पकड़ने जाते हैं, तीसरा छूट जाता है। चारों ही अलंकारधारी बनो। चारों अलंकार को पकड़ो। तभी तो आप साक्षात्कारमूर्त बन औरों को अनुभव करायेंगे।

तो चारों ही अलंकार में सबसे पहला है शंख, तो जो बाबा का परिचय सबको सुनाते रहते हैं, शंख ध्वनि तो चलती रहती है चलते-फिरते भी। दूसरा कमल पुष्प समान जीवन तो है ही है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं तो सभी ने पवित्रता को धारण किया है। माना कमल पुष्प भी पकड़ा है। तो दो अलंकार तो पकड़े हैं। और तीसरा है ज्ञान की गदा। तो मुर्ली भी कभी मिस नहीं करते हैं। मुर्ली भी रोज सुनते हैं। तो तीन अलंकार तो पकड़े हुए ही हैं सबने। रह गया तो कौन-सा रह गया? स्वदर्शनचक्र। ये घूमता नहीं है। स्वदर्शनचक्र ही छूट जाता है हमारा। और बाबा रोज लगभग साकार मुर्ली के अन्दर कहते हैं बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी बनो। स्वदर्शनचक्र को घुमाओ। क्यों घुमाने के लिए कहता है? उससे क्या होगा? तो बाबा ने कई मुर्लियों में सुनाया है कि बच्चे जितना स्वदर्शनचक्र को घुमायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। जितना स्वदर्शनचक्र को घुमायेंगे आत्मा पावन बनती जायेगी। - क्रमशः

सेल्फ हेल्प



मेडिटेशन का मर्म देखो क्या, आपको ध्यान लगाना नहीं है ध्यान हटाना है। जिन-जिन चीजों पर हमारा ध्यान लगा हुआ है जैसे घर पर, बिजनेस पर, पैसे पर, बच्चों पर जिस पर भी हमारा ध्यान लगा हुआ है। जब हमको ध्यान में आता है तो हमारा ध्यान बंट जाता है और जब हमारा ध्यान बंट जाता

ध्यान हटाना है न कि लगाना है...

है तो हम सारे रात भी उनके बारे में सोचते हैं और दिन में भी उनके बारे में सोचते हैं। तो ध्यान या योग हमको ये सिखाता है कि कैसे मुझे इन सारी बातों से ध्यान हटाना है फिर परमात्मा में लगाना है। तो सबसे ज्यादा इम्पोर्टेंट या महत्वपूर्ण है ध्यान हटाना न कि लगाना। जैसे और-और चीजों से ध्यान हट जायेगा तो ध्यान ऑटोमेटिकली लग जायेगा। इस तरह से हम अपने आपको सिक्कोर, सेफ, और उम्दा बना सकते हैं। तो ध्यान को आसान बनायें और इसे अपने जीवन में अपनाकर इसका सुख लें। और इससे बेहतर और कुछ हो नहीं सकता।



भुसावर-भरतपुर(राज.)। पृथ्वी दिवस के अवसर पर गांधी ज्योति महिला महा विद्यालय में पौधारोपण करते हुए ब्रह्माकुमारीज उपसेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. संस्कृति बहन, गांधी ज्योति महिला महा विद्यालय के संचालक राजेंद्र पाण्डेय, वीरेंद्र पचोरी, प्रदीप सिंह, चेतन कौशल तथा अन्य।



जयपुर-बनीपार्क(राज.)। नर्सिंग डे के अवसर पर सीके बिरला अस्पताल में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, ब्र.कु. पद्मा बहन, ब्र.कु. कुणाल, अस्पताल की नर्सिंग सुपरिटेण्डेंट सिस्टर बिंदु तथा सभी नर्सिंग स्टाफ मौजूद रहे।



दिल्ली-दिलशाद गार्डन। ब्रह्माकुमारीज के शांति सदन,पूर्वी दिल्ली सेवाकेंद्र में मातृ दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. इन्द्रा दीदी, ब्र.कु. अमृत दीदी,सेवाकेंद्र संचालिका, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. नीता बहन, ब्र.कु. सावित्री बहन, डॉ. संध्या,पूर्व सीएमओ,एमसीडी, श्रीमती विमला,पूर्व अधीक्षक,नर्सिंग,जीटीबी अस्पताल,दिल्ली सरकार तथा अन्य।



सुरतगढ़-राज. ब्रह्माकुमारीज द्वारा एपेक्स हॉस्पिटल में अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रानी दीदी, एपेक्स हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. अरविंद बंसल तथा अन्य डॉक्टर सहित सभी नर्सिंग स्टाफ मौजूद रहे।



राँची-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के दौरान समूह चित्र में सेवाकेंद्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, प्रतिभागी बच्चे व उनके अभिभावक तथा अन्य भाई-बहनें। शिविर के दौरान नरेंद्र पाल सिंह,व्यवसायी, कवलजोत कौर,शिक्षिका,लोरेटो कॉन्वेंट, अंजलि दास,आचार्य,एमपीएम कॉलेज, विभा सिंह,समाजसेवी, ब्र.कु. प्रदीप, ब्र.कु. इंदु आदि शामिल रहे।